IJASRM International Journal of Advanced Scientific Research and Management, Special Issue 5, April 2019
www.ijasrm.com
ISSN 2455-6378

गरीबी उन्मूलन (जनजाति के संदर्भ में)

श्रीमती अंजली गढ़वाल, प्रभारी प्राचार्य,
शासकीय महाविद्यालय रेहटी, सीहोर

भूमिका :-

गरीबी एक वैष्विक समस्या है , जिससे न केवल भारत अपितु विष्व के अधिकांष देष ग्रसित है । भारत जैसे देष में गरीबी जाति, लिंग, धर्म, आदि के आधार पर विभिन्न रूपों में दिखायी देती है । समाजषास्त्रीय दृष्टिकोण से गरीबी की परिभाषा सापेक्षता, असमानता के सन्दर्भ में दी गई है । सभी समाजों में निष्चित न्यूनतम जीवन-स्तर होता है और उस स्तर से नीचे की स्थिति में जीवनयापन करने वाले उस समाज के लोग गरीब कहलाते है । इस प्रकार गरीबी का निर्धारण समाज के जीवन-स्तरों से सामाजिक मानदण्डों के अनुसार किया जाता है । समाजषास्त्रीय दृष्टि से गरीबी एक प्रकार की असमानता है जो निर्धनों की जीवन-दषा तथा उनके जीवित रहने की सम्भावनाओं पर आय की असमानता से पड़ने वाले प्रभावों को स्पष्ट करती है । जिनके पास जीवन की अनिवार्य आवष्यकताओं की पूर्ति करने के लिए साधन या पैसा या सामर्थ्य नही है , वे निर्धन कहलाते है । जो लोग आय निम्नक्रम के तल पर होते है उनको गरीबों की श्रेणी में रखा जाता है । गरीबी एक आर्थिक एवं सामाजिक समस्या है । गरीबी एड्स नामक बीमारी से भी ज्यादा भयावह है । दुनिया के सभी लोगों को संतुलित आहार, पहनने को पर्याप्त वस्त्र एवं रहने के लिए आवास उपलब्ध नही है । कमोबेष भारत में भी स्थिति काफी खराब है ˙ भारत के लाखों परिवार ऐसे है जो गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे है । जिन्हे दो वक्त की रोटी भी नसीब नही हो रही है । वर्ष २०११ की जनगणना के अनुसार ३६.१७ करोड़ लोग गरीब है । गरीबी सामाजिक-आर्थिक समस्या का कारण है । वर्तमान अध्ययन गरीबी उन्मूलन परियोजना के माध्यम से जनजाति में सामाजिक गतिषीलता को प्रस्तुत किया गया है ।

जनजातिः-

भारतीय समाज विभिन्न धर्मो एवं संस्कृतियों का संगम है । जनजातीय समुदाय भारतीय संस्कृति का अभिनन अंग है । भारत में अनेकों जनजातीय समुदाय प्राचीन समय से ही पाये जाते है । रामायणकालीन शबरी अथवा महाभारतकालीन एकलव्य भील जनजाति के प्रतीक के रूप में हमारे सामने आते है । जनजाति किसी भी ऐसे स्थानीय समुदायों के समूह को कहा जाता है, जो एक सामान्य भू-भाग पर निवास करता हो, एक सामान्य भाषा बोलता, हो और एक सामान्य संस्कृति का व्यवहार करता हों । प्रत्येक जातीय समाज की अपनी एक अलग आन्तरिक स्थिति होती है । यही तथ्य जनजातियों के लिये भी सत्य सिद्ध होता है । जनजातियों के अध्ययन से यह तथ्य प्रकाष में आता है कि विभिन्न जनजातियों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है, उनकी अपनी कुछ निजी प्रथाएं एवं परम्पराएं है, जिसका वे अनवरत् रूप से पालन करते आ रहे है । जनजाति मध्यप्रदेष में बहुलता में पायी जाती है ।

उद्देष्यः-

- गरीबी के बारे में पता लगाना ।
- गरीबी को दूर करना ।
- गरीबी हटाओं योजना का अध्ययन करना ।
- जनजाती के बारे में जानना ।
- योजनाओं का क्रियान्वयन को समझना ।

शब्द कुंजीः-

गोंड, गरीबी, भोजन, स्वच्छता, समूह, योजना, विकास, क्रियान्वयन जिला गरीबी उन्मूलन परियोजना

जिला गरीबी उन्मूलन परियोजना - इन्दिरा गांधी गरीबी हटाओं योजना

मध्य प्रदेष सरकार ने विष्व बैंक की सहायता से गरीबों के विकास के लिए जिला गरीबी उन्मूलन परियोजना (डी.पी.आई.पी.) का प्रारम्भ किया गया । जिला गरीबी उन्मूलन परियोजना (डी.पी.आई.पी.) की शुरूआत २००१ से की गई । आजीविका परियोजना का प्रेरक उद्देष्य है कि इस योजना के अंतर्गत समाज के उन वर्गो को खड़ा करना है जो आज भी हमसे बहुत पीछे रह गए है । यह योजना सरकार द्वारा प्रदेष के १४ जिलों मे क्रियान्वित है । इस कार्य के द्वारा पिछड़े वर्गो में भी अपने समान ज्ञान, नेतृत्व क्षमता, व्यवसाय, विकास के लिए कार्य और ऐसे बहुत से कार्य है जो उनके द्वारा किए जाते है , उनको पूर्ण रूप से नई दिषा देना, उनके नए आयाम खोजना ताकि उन्हे पूर्ण रूप से सक्षम बनाना, इस योजना का मुख्य उद्देष्य है । इस परियोजना का लक्षित समूह - आर्थिक रूप से वंचित समूह, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के परिवार,

IJASRM International Journal of Advanced Scientific Research and Management, Special Issue 5, April 2019
www.ijasrm.com
ISSN 2455-6378

मजदूरी रोजगार के लिए पलायन करने वाले परिवार, उचित आवास एवं आश्रय रहित परिवार, महिलाएं एवं परिवारों का नेतृत्व करने वाली महिलाएं है । यह व्यक्ति के स्थान पर समूह पर आधारित योजना है । इस योजना में सरकार द्वारा चिन्हित किए गए गांवों, कस्बों तथा जिलों में इस योजना का क्रियान्वयन किया गया । इसके तहत् २६३२ गांव, ५३ विकासखण्डों और १४ जिलों को लिया गया जो निम्नानुसार हे - १. छतरपुर, २. दमोह, ३. सागर, ४. पन्ना, ५. रायसेन, ६. विदिषा, ७. गुना, ८. टीकमगढ़, ६. सीधी, १०. नरसिंहपुर, ११. राजगढ़, १२. रीवा, १३. शाजापुर, १४. षिवपुरी ।

जिला गरीबी उन्मूलन परियोजना (डी.पी.आई.पी.) ने सभी जिलों के गांवों एवं विकासखण्डों को मिलाकर 'ग्रामीणों के लिए अभिप्रेरणा' नाम का एक कार्यक्रम बनाया, जिसमें ५६,००० परिवारों ने भाग लिया । यह बताया गया कि आप अपने जीवन को कैसे बदल सकते है, आप अपने तरीकों से अपने स्तर पर कैसे सुधार ला सकते है ं इस कार्य को करने के लिए सरकार आप को वित्तीय व तकनीकी सहायता प्रदान करेगी ं सभी स्तरों पर लोगों को जोड़ने के लिए इस संस्था ने समाहित समूह (ब्ळ.ब्वउउवद प्दजमतमेज ळतवनचेद्ध नाम का एक समूह बनाया, जिसमें लोागें को वित्तीय व तकनीकी सहायता प्रदान की गई । इसके अंतर्गत की गतिविधियॉ इस प्रकार है -

1- **भू-आधार** -भू-भाग पर कुल २५८०८ योजनाऐं चलाई गई - जिसके तहत ६५५७ कुएं, ३११८ ट्यूवबेल, पम्प, पाईप आदि ऐसे कार्य किए गए ।

2- **पशु कृषि फार्म** - जिसमें कुल १२,६६६ योजनाओं का क्रियान्वयन हुआ - जिसमें ८३६४ डेयरी, पोल्ट्री फार्म ३७४, अन्य ३२५ आदि ऐसी विभिन्न योजनाओं पर कार्य किये गये ।

3- **ट्रेडिंग** - जिसमें कुल ३८५४ योजनाओं का क्रियान्वयन हुआ ।

ग्राम विकास समूह ;टक्ब्.टपससंहम क्मअसवचउमदज बवउउपजजममद्ध.

'ग्राम विकास समूह' के ग्रामीणों ने स्वयं का एक बही खाता बनाया है जिसका नाम " **अपना कोष** " रखा गया है , जिसमें २६५० लोगों ने अपना रजिस्ट्रेषन करवाया ।

क्र. सं.	प्रकार	उदाहरण
१.	भूमि स्तर पर	कृषि के विकास के लिए कुँए , ट्यूबवेल, मोटर पाइपलाईन आदि
२.	पशु कृषि फार्म	इसमें पषु पालन डेयरी, पोल्ट्री फार्म आदि ।
३.	कार्य क्षेत्र / ग्रामीण व्यवसाय	इसके अन्तर्गत भवन निर्माण, कारीगरी, बढ़ई, द्वारा बनाई गई वस्तुओं का व्यवसाय, साईकल व आटो रिक्षा सुधारने की दुकान, रोड के किनारे होटल, अचार व पापड़ उद्योग, टेलर, राईस मील आदि ।
४.	लेन-देन (ट्रेडिंग)	इसके अन्तर्गत किराना की दुकार, जनरल स्टोर, कपड़े की दुकान, मोाबईल की दुकान, फोटो कॉपी शॉप, बर्तन की दुकान, चमड़े के जूतों की दुकान आदि ।
५.	आधारभूत संरचना	इसके अन्तर्गत पीने के पानी की व्यवस्था, सामुदायिक भवन का निर्माण, स्कूल भवनों का निर्माण, ग्रामीण लोगो से जुड़े रहने के लिए संरचना, वन व जल का संरक्षण विद्युतीकरण करना आदि ।

जिला गरीबी उन्मूलन परियोजना (डी.पी.आई.पी.) द्वारा पाये गये परिणाम जिस कारण उसको सफल माना जाता है :-

कुल आय में वृद्धि - ६५ प्रतिषत
कृषि के क्षेत्र मे बढ़ोत्तरी- १४६ प्रतिषत
कृषि की आय में बढ़ोत्तरी- ६६ प्रतिषत
पशुपालन कुल आय में बढ़ोत्तरी- ६६ प्रतिषत

गरीबी उन्मूलन एवं जनजाति :-

जिला गरीबी उन्मूलन परियोजना (डी.पी.आई.पी परियोजना) १४ जिलों मे १५८ पी.एफ.टी के माध्यम से अपना कार्य कर रही है । इस परियोजना के मैदानी अमले की निरंतर कोषिष एवं मेहनत के नतीजे अब धीरे-धीरे साफ नजर आ रहे है । चाहे वह प्रथम चरण के गॉव हो, जिनमें समाहित समूहों द्वारा कार्य किया गया था अथवा नवीन जोड़ें गये गॉव हो, सहयोग दल इकाईयों द्वारा सकारात्मक कार्य किया जा रहा है । प्रारंभिक अर्द्धवार्षिकी में परियोजना द्वारा ग्राम प्रवेष, मोबाईलजेषन, समूह गठन, समूहो की बचत तथा रोजगार कार्यक्रम में सराहनीय प्रगति की गई है ।

IJASRM International Journal of Advanced Scientific Research and Management, Special Issue 5, April 2019
www.ijasrm.com
ISSN 2455-6378

सभ्यता आधारित महिला स्व-सहायता समूहो को केन्द्रित कर स्वयं की बचत का संदेष दिया जाकर परियोजना द्वारा कार्य किया जा रहा है । हाल ही में समाप्त वित्तीय वर्ष तक परियोजना क्षेत्र के १६१६ गॉवों मे प्रवेष कर ६३ हजार ४०५ ग्रामीण परिवारों को समूह चक्र में लाकर ५ हजार २६३ हजार स्व-सहायता समूहों का गठन किया गया है । इन समूहों द्वारा ८४० ग्राम उत्थान समितियों का कठन किया गया है । समूहों द्वारा स्वयं की बचत कर ९७.६१ लाख रूपये समूह निधि एकत्रित की गई है तथा परियोजना के माध्यम से ३ करोड़ रूपये से अधिक सीड लोन के रूप में दिया गया है । निम्नलिखित तालिका मे परियोजना के प्रथम वित्तीय वर्ष की उपलब्धियॉ प्रस्तुत की गयी है :-

गतिविधि	लक्ष्य	उपलब्धि
ग्राम निवेष	१,५००	१६१६
स्व-सहायता समूह गठन	५०००	५२६३
ग्राम उत्थान समिति गठन	१,५००	८४०
कौषल उन्नयन एवं प्रषिक्षण (सदस्य संख्या)	३०००	२४०३
नियोजन (सदस्य संख्या)	५०००	९५७२

सहयोग दलों द्वारा एक रणनीति के अन्तर्गत समूहों एवं ग्राम उत्थान समितियों के प्रषिक्षण पर विषेष ध्यान दिया गया है । नतीजन ४ हजार से अधिक समूहो को प्रषिक्षण दिया गया है । लगभग ४० समूहों को विभिन्न एक्सपोजन विजिट पर भेजा जा चुका है , १८ प्रकार के विभिन्न प्रषिक्षण एवं एक्सपोजर के माध्यम से परियोजना कर्मियों का क्षमतावर्द्धन किया गया है । परियोजना के द्वारा २२५ से अधिक परियोजना कर्मियों को आंध्रप्रदेष, बिहार तथा अन्य राज्यों का एक्सपोजर कराया गया है तथा ५६५ ग्राम उत्थान समितियों द्वारा अनुदान राषि प्राप्त कर २ हजार ६३८ समूहों को प्रारम्भिक ऋण दिया गया है । समूहों द्वारा प्राप्त ऋण अपने सदस्यों को सामान्यतः कृषि, स्वास्थ्य, षिक्षा, भोजन, पुराना ऋण चुकाने तथा अन्य कार्यो में दिया गया है सदस्यों द्वारा सबसे अधिक ऋण सबसे अधिक ऋण कृषि संबंधी कार्यो के लिए यानि ३२ प्रतिषत लिया गया ।

निष्कर्ष :-

गरीबी उन्मूलन परियोजना के माध्यम से जनजाति में सामाजिक गतिषीलता का विकास हुआ है । जनजाति के सामाजिक संगठन के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनजाति परिवारों के स्वरूप में अंतर आ रहा है । जनजाति में संयुक्त परिवार की प्रधानता पाई जाती है। लेकिन समय के साथ-साथ यह परिवार कम होते जा रहे है । जिसका प्रमुख कारण औद्योगीकरण एवं मुख्य रूप से गरीबी है । इसके कारण जनजाति एक गॉव से दूसरें शहर मे प्रवास करते है । जो वहीं पर बस जाते है । धीरे-धीरे एकल परिवार में परिवर्तित होते जा रहे है । प्रस्तुत शोध-पत्र में गरीबी उन्मूलन जनजाति परिवारों से संबंधित जानकारी एकत्रित करना मुख्य उद्देष्य है । जिसके माध्यम से जनजाति परिवारों का विकास किया जा सकें । गरीबी उन्मूलन परियोजना के प्रभाव से जनजाति के आर्थिक जीवन, सामाजिक स्थिति में आये परिवर्तन को ज्ञात किया गया है । गरीबी उन्मूलन परियोजना नीतिगत रूप से जनजाति की संस्कृति को ध्यान में रखते हुए इसका गठन किया गया था ।

सुझावः-

- गरीबी के कारण हो रहे पलायन को रोकना ।
- जनजाति में षिक्षा को बढ़ावा देना ।
- स्व-सहायता समूह के माध्यम से सषक्त बनाना ।
- स्वरोजगार हेतु ऋण प्रदान करना ।
- महिला जनजाति की सहभागीता को बढ़ावा देना ।

संदर्भः-

- ट्राइबल एजुकेषन वेंकटेष प्रकाष नई दिल्लीः- एन. के.अम्बष्ठ २००१
- ट्राइबल डेवलपमेंट एडमिनिस्ट्रेषन कनिष्क पबलिसिंग हाउस दिल्लीः-एम.बापूजी १९९३
- द डायनमिक्स आफ रूलर सोसासयटी बर्लिन प्रेसः-आर.के.मुखर्जी १९५७
- मध्यप्रदेष की जनजातियॉ एवं समाज व्यवस्था,म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल :- आर.पी. मिश्रा १९७८
- जनजाति समाजषास्त्र म.प्र.हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपालः-श्रीनाथ शर्मा २००९
- आयुक्त आदिवासी विकास मध्यप्रदेष भोपाल
- ट्राइबल बेवसाईट